(1) भौतिक वस्तुओं में "कम ही अधिक है" के सिद्धांत को अपनाएँ। जानकारी से अवगत बनें, जानकारी के बोझ से विकृत नहीं। एक नेता बनने का प्रयास करें, अंधानुकरण करने वाला नहीं। यदि आप नेता या शिक्षक नहीं हैं, तो एक जागरूक अनुयायी बनें। 1 या 2 विषयों अथवा विधाओं को गहराई से सीखें। हर चीज़ में हाथ डालकर किसी में भी निपुण न बनने से बचें।

(2) अपने फोन या लैपटॉप में क्लाइंट्स की फोटो, पत्रिका, विवरण और उनकी कहानियाँ सेव करके उनकी ऊर्जा एकत्रित करने से बचें। आवश्यकता होने पर इन्हें किसी अन्य तरीके से सुरक्षित रखा जा सकता है।

(3) त्योहारों, पूजा सामग्री, हवन सामग्री आदि की सजावट को वर्षों तक इकट्ठा करके रखने से बचें, खासकर उन चीज़ों को जिन्हें आप बहुत कम उपयोग करते हैं।

(4) नमक, स्प्रे, मोमबत्तियाँ, एसेंशियल ऑयल, पोटपौरी, सुगंध, अगरबत्ती और धूपबत्ती जैसी वस्तुओं का उपयोग खरीदने के 12 से 15 महीनों के भीतर कर लें।

(5) फूल, तोरण, दीवार एवं दरवाज़े की सजावट, कैलेंडर, पोस्टर, त्योहारों के स्टिकर आदि का नियमित उपयोग करें और समय-समय पर उन्हें हटाते रहें।

(6) वॉलेट, पर्स, हैंडबैग, अलमारी, शेल्फ, वार्डरोब, ड्रॉअर, कॉर्नर टेबल आदि में महीनों से जमा आध्यात्मिक और धार्मिक कबाड़ को समय-समय पर खाली और साफ़ करते रहें।

(7) हर 3 महीने में अपने फोन, लैपटॉप, iPad और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की अच्छी तरह सफाई, हीलिंग, कट, क्लियर, डिलीट और आवश्यक चीज़ों को व्यवस्थित रूप से सेव करने का समय निकालें।

(8) सुनिश्चित करें कि आपका अटारी, बेसमेंट, बॉक्स बेड, बॉक्स सोफा, स्टोरेज रूम और कार का इंटीरियर हर महीने निगरानी रखकर अव्यवस्था से मुक्त रखा जाए।

(9) फ्रिज में सबसे अधिक जमा और स्टोर की हुई चीज़ें होती हैं, जो यदि साप्ताहिक रूप से साफ़ न की जाएँ तो अवसाद, चिंता और नकारात्मकता का कारण बन सकती हैं। यह ऊर्जा सीधे शरीर में जाती है क्योंकि हम कई बार बिना सजगता के सिर्फ खाना गर्म करके खा लेते हैं।

(10) बाथरूम और वॉशरूम में किताबें, कोट्स, पोस्टर, कार्ड्स, सजावटी वस्तुएँ आदि रखने से बचें, क्योंकि उन वस्तुओं की ऊर्जा पाचन और अन्य शारीरिक प्रक्रियाओं में बाधा डाल सकती है।